हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ८

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

सन्ध्याकाल की पूजा

वर्ष २०१६ में, गुरुमाई जी के कहने पर सभी स्वामीगण ने माह में एक बार, मन्त्र-पाठ आरम्भ किया — पहले भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में और इस वर्ष, २०१८ से श्री निलय में। गुरुमाई जी ने स्वामीगण को इन मन्त्रों का पाठ करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उन्होंने १९९० के दशक के आरम्भ में, शास्त्रों का अध्ययन करते समय ब्राह्मणवन्द से सीखे थे। इस तरह से स्वामीगण, इस ज्ञान को खुद अपने अन्दर व श्री मुक्तानन्द आश्रम में जीवन्त रखेंगे। हर माह, स्वामीगण यह चुनाव करते हैं कि विशेष अवसर, महोत्सव या वर्षगाँठ पर कौन-से मन्त्रों का पाठ करना चाहिए।

सन् २०१८ में, गुरुमाई जी के जन्म दिन पर, श्री मुक्तानन्द आश्रम में यहाँ श्री मुक्तानन्द आश्रम में, बादलों की गड़गड़ाहट के साथ बिजली चमक रही थी। काले, घने, जल से लदे मेघ पूरे आकाश में उमड़-घुमड़ रहे थे। वर्षा मूसलाधार थी, भारत के मानसून की भाँति। हमें विपुलता से आशीर्वाद प्राप्त हो रहे थे। हमारा हृदय, इस दिन का गीत गा रहा था : जन्मदिन की जय जय! गुरुमाई की जय जय!

सायंकाल और उसके साथ, मन्दिर में संध्याकालीन आरती का समय जब निकट आया तो हम सभी सोच में पड़ गए कि "हम इस तूफ़ानी बारिश में आत्मनिधि से अनुग्रह बिल्डिंग तक कैसे पहुँचेंगे?"

हमें उत्तर के लिए अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। आश्चर्य की बात थी कि आरती से ठीक एक घण्टे पहले बादल छँटने लगे। बादलों के बीच नीला आकाश दिखने लगा और सूर्य का प्रकाश आश्रम की भूमि पर मृदुलता से झिलमिलाने लगा।

इस वर्ष दो सिद्धयोगियों ने, गुरुमाई जी के जन्मदिन के सम्मान में एक सुन्दर कविता लिखी और उन्हें भेंट की। मन्दिर जाते हुए, हम सब अपने हृदय में जो महसूस कर रहे थे, यह कविता उसे बहुत ही सटीक व काव्यात्मक रूप से अभिव्यक्त कर रही है :

उपवन के पुष्पित सुमनों में,
पवन के सुरभित झोंको में,
रवि की उज्जवल किरणों में,
शशि की धवल रश्मियों में,
गूँज यही है, यही संदेसा
जन्मदिन की जय जय !
गुरुमाई की जय जय !

मन्दिर पहुँचकर, हमने सुनहरे परिधान और पगड़ी में सुसज्जित बड़े बाबा के तेजोमय स्वरूप के दर्शन किए। अपना स्थान ग्रहण करने से पूर्व हमने बड़े बाबा की पादुकाओं को प्रणाम अर्पित किया।

हम लोग ध्यान कर रहे थे तभी एकाएक हमें खिलखिलाती हँसी की आवाज़ सुनाई दी। हमने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि श्रीगुरुमाई, मन्दिर में प्रवेश कर रही थीं! गुरुमाई जी बड़े बाबा के समक्ष रखी पादुकाओं की ओर बढ़ने लगीं और हम श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ उन्हें निहारते रहे।

एक प्रतिभागी ने बाद में बताया :

> सिद्धयोग गुरुओं, गुरुमाई जी और बड़े बाबा, दोनों के सान्निध्य ने मुझे आराधना व भक्ति की शक्ति, श्रीगुरु की कृपा व उनसे आशीष प्राप्त करने के प्रति जागरूक बना दिया है।

गुरुमाई जी ने बड़े बाबा को प्रणाम अर्पित किया। उसके बाद, संगीत निर्देशक, कृष्ण ने पुजारी को सायंकालीन आरती आरम्भ करने का संकेत दिया। उनका निर्देश पाकर संगीतकारों व प्रतिभागियों ने एक साथ मिलकर अत्यन्त मनोरम, समरसपूर्ण ध्वनि का सृजन किया। नगाड़ों की गहन व सधी हुई ध्वनि गुँजायमान हो रही थी। घण्टियाँ व डमरु बज रहे थे, शंखनाद हो रहा था।

इन ध्वनियों के नाद पर तीन पुजारियों ने बारी-बारी से बड़े बाबा की आरती की। पारम्परिक रूप से, पहले छोटे दीए से आरती आरम्भ करते हैं जिसमें कम बत्तियाँ होती हैं, फिर बड़ा दिया लिया जाता है, जिसमें अधिक ज्योतियाँ प्रज्वलित होती हैं। जब तीसरे पुजारी ने आरती समाप्त की तब नगाड़ों की आवाज़ थम गई। फिर पुजारी ने कर्पूर जलाया और बड़े बाबा को आरती देते हुए सुगन्धित धुँआ उन्हें अर्पण किया।

कर्पूर जो कि संस्कृत शब्द है व जिसे हिन्दी में कपूर भी कहते हैं, एशिया के कई भागों के सदाबहार कर्पूर लॉरेल के वृक्षों से लिया जाता है। इन वृक्षों की लकड़ी व छाल के शुद्ध अर्क से बूँद-बूँद कर मोम जैसा ठोस, श्वेत पदार्थ तैयार किया जाता है जिसे हम कपूर के रूप में पहचानते हैं। कपूर अपने औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है, और जब इसे जलाया जाता है, यह वातावरण को शुद्ध करने में मदद करता है।

भारत में, मन्दिरों व घरों में पूजा-अर्चना के समय कपूर का प्रयोग किया जाता है। यज्ञ की पूर्णाहुति के समय व पूजा-अनुष्ठानों में ब्राह्मणवृन्द कपूर जलाते हैं। इसका जलना, मृत्यु से अमरता की ओर, जाने को दर्शाता है। कपूर स्वयं नश्वरता का द्योतक है। जब कपूर को जलाया जाता है तो उसके जलने के पश्चात जो सुगन्धित धुआँ, शेष रह जाता है वह अमरत्व का प्रतीक है। अतः जब भक्तजन कपूर की आरती भगवान को अर्पण करते हैं तो वे उन्हें वह अर्पित कर रहे होते हैं जो अमर है — उनका प्रेम व भक्ति। यह प्रथा है कि फिर भगवान से आशीर्वाद ग्रहण करने के लिए, भक्त स्वयं भी उस सुगन्धित धुँए की आरती लेते हैं।

सिद्धयोग आश्रमों में हम यह श्लोक सायंप्रातः की आरती में गाते हैं :

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

कपूर के समान गौर वर्ण, करुणा व दया के अवतारस्वरूप, समस्त संसार के सारभूत, सर्पों के राजा शेषनाग को हार की तरह गले में धारण किए हुए, भवानी के साथ सबके हृदय-कमल में निवास करने वाले भगवान शिव को मैं नमस्कार करता हूँ।

हवा, कपूर से सुगन्धित हो रही थी; तभी हारमोनियम से आती ध्वनि ने सायंप्रातः की आरती गाने के लिए हमारा मार्गदर्शन किया। हृदय की गहराई से भगवान का स्तुतिगान करते हुए हम सभी की आवाज़ें एक स्वर हो गईं।

१९६० के दशक से सिद्धयोग आश्रमों में सायंप्रातः की आरती गाई जा रही है। बाबा मुक्तानन्द ने अनेक शास्त्रीय स्तोत्रों से श्लोकों का चयन किया व उन्हें संकलित कर इस आरती को संगीतबद्ध किया।

आरती के समापन पर हमने बड़े बाबा को प्रणाम कर अपना स्थान ग्रहण किया। फिर गुरुमाई जी ने कृष्ण से कहा कि वे संगीत मण्डली को मन्त्रधुन, ॐ नमः शिवाय, राग भूपाली में गाने के लिए आमन्त्रित करें। आपको स्मरण होगा हमने यह मन्त्र, महोत्सव सत्संग में नामसंकीर्तन की माला के दौरान गाया था। अतः यह दोहरा आशीर्वाद था, सिद्धयोग के दीक्षा मन्त्र को गुरुमाई जी के साथ पुनः गाने का। हमने कुछ मिनटों के लिए मन्त्रधुन की, हमारे मन ने इस मन्त्र की ध्वनि में विश्रान्ति पाई जोकि सभी को संरक्षण प्रदान करता है। फिर हमने ध्यान किया, मन्त्र के स्पन्दन अभी भी वातावरण में हिलोरें ले रहे थे।

सिद्धयोग पथ पर, ध्यान की अवस्था से धीरे-धीरे बाहर आना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिए, गुरुमाई जी ने विशिष्ट ध्वनियों जैसे विण्ड चाइम्स और गॉन्ग का प्रयोग करने का अभ्यास स्थापित किया है ताकि साधक सहजतापूर्वक ध्यान से बाहर आ सकें। गुरुमाई जी के जन्मदिन पर, सायंप्रातः की आरती के पश्चात, ध्यान के समापन पर, चाइम्स की झंकार, हमारी चेतना को ध्यान से बाहर ले आई।

अब स्वामी ईश्वरानन्द बोलने के लिए खड़े हुए, क्योंकि वे सायंकालीन आरती के सूत्रधार थे। जब वे माइक की तरफ बढ़ रहे थे, तब गुरुमाई जी सहित हममें से कई लोगों का ध्यान खिड़की के बाहर वैभवपूर्ण दृश्य की ओर गया : तेजोमय तूफ़ानी बादल जो कि वर्षा के संकेत से भरे थे। गुरुमाई जी ने कहा कि किस प्रकार उस दिन हमने सभी ऋतुओं का अनुभव किया था जो अनेक देशों का प्रतिनिधित्व कर रही थीं; वे देश जो विश्वभर में महोत्सव मना रहे थे।

फिर गुरुमाई जी ने हमसे पूछा कि क्या हम थोड़ी देर और सत्संग में रहना चाहते हैं। निस्सन्देह, हमने एक स्वर में कहा, “जी हाँ!”

गुरुमाई जी ने ओंकारी लिंड्से, संगीत मण्डली की एक सदस्या से पूछा कि वह प्रातः जन्मदिन महोत्सव सत्संग पर कौन सा अनुभव बाँटने की तैयारी कर रही थी। गुरुमाई जी ने कहा कि अब ओंकारी वह बता सकती है। फिर स्वामी जी ने प्रतिभागियों को समझाया कि जब हम सबने गुरुमाई जी के जन्मदिन

की सारिणी को पुनः तैयार किया तो उससे पहले शिक्षण समिति ने, प्रातः के सत्संग में ओंकारी को अपना अनुभव बाँटने के लिए आमन्त्रित किया था।

ओंकारी ने गुरुमाई जी को धन्यवाद दिया और गोल्डन टेल्स के बारे में बताने लगीं। गोल्डन टेल्स, ये कथाएँ वर्ष १९९८ से २००१ के बीच श्री मुक्तानन्द आश्रम और गुरुदेव सिद्धपीठ में, गुरुमाई जी की ओर से बच्चों व किशोर-युवाओं के लिए एक अभूतपूर्व उपहार थीं। द गोल्डन टेल्स, नाट्य अभिनयों की एक शृँखला थी जो डिनीस थौमस द्वारा निर्देशित की गईं थीं। इनमें बच्चों व युवाओं ने सन्त-कवियों के जीवन पर नाट्य प्रस्तुत किए थे, और भारत के महाकाव्य, महाभारत व रामायण की कथाओं को दर्शाया था। इस वर्ष २०१८, में गोल्डन टेल्स की बीसवीं वर्षगाँठ है।

जिन बच्चों ने इन नाटिकाओं में भाग लिया था — जो कि अब युवा हो गए है, आज तक उन्हें इनमें भाग लेने का, अपना अनुभव सुस्पष्टता से याद है। उन्होंने जो सीखा, वह आज भी उन्हें याद है और उससे प्राप्त सीख को उन्होंने अपने जीवन में अपनाया है। महान आत्माओं के जीवन को वर्णित करते हुए व उनकी भूमिका निभाते हुए, इन युवाओं ने सेवा के अमृत का रसास्वादन किया था; उन्होंने सिद्धयोग साधना के प्रति वचनबद्ध होना व उस वचनबद्धता को दृढ़ करना सीखा; उन्होंने भक्ति के महत्त्व को जाना; उन्होंने भगवान के प्रति ललक व प्रेम की शक्ति का अनुभव किया। और अन्तिम पर महत्त्वपूर्ण बात, उनके अन्दर धर्म की स्पष्ट समझ को प्रतिष्ठित किया गया था। इन नाट्यकलाओं की परम्परा आज भी जारी है। बहुत-से बच्चे गोल्डन टेल्स् की रिकार्डिंग देखते हुए बढ़े हो रहे हैं, वे उन भजनों व अभंगों या कव्वालियों को सुनते हैं प्रत्येक नाट्य के लिए, जिनकी रचना स्वयं गुरुमाई जी ने की थी। इन नाट्यों को देखते हुए व इन गीतों को सुनकर वे सिद्धयोग पथ की मूलभूत सिखावनियों को जान व समझ पाए हैं।

ओंकारी की बात पर वापस आते हैं — उन्होंने गोल्डन टेल्स में भाग लेने के बारे में बताया कि :

> यद्यपि हम बच्चे व किशोर थे, हमें यह सन्देश दिया गया था कि हम लोग गुरुमाई जी की सिखावनियों को, सिद्धों के जीवन को, और उनके अनुभवों में निहित असाधारण उदाहरणों को लोगों तक पहुँचाने में पूर्णतयः सक्षम थे। हमें गुरुमाई जी की सिखावनियों को ठोसरूप में दर्शाने हेतु सुपात्र बनने का यह अद्‌भुत उत्तरदायित्व सौंपा गया था। सन्त जनाबाई की भूमिका निभाते हुए, मैंने यह गहनतर समझ पाई कि सिखावनियों को आत्मसात् करने का अर्थ क्या होता है।

सन्त जनाबाई के जीवन का प्रत्येक क्षण, सेवा के लिए व भगवान को पाने के लिए समर्पित था। किशोरावस्था में, सन्त जनाबाई की कथा ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी व आज भी वह कथा मुझमें सशक्तरूप से स्पन्दित होती है — मुझे पूर्णरूप से खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।

फिर ओंकारी ने एक सुन्दर भजन गाया जो गुरुमाई जी ने द गोल्डन टेल्स : द लाइफ ऑफ़ सूरदास, यानि सन्त सूरदास के जीवन के लिए लिखा था। इस भजन का भाषान्तर हैं :

‘उनका’ नाम गाने से, मैं आनन्दविभोर हो जाती हूँ!
तप से नहीं,
किन्तु ‘उनका’ नाम गाने से, मैं आनन्दविभोर हो जाती हूँ!
जप से नहीं,
किन्तु ‘उनका’ नाम गाने से, मैं आनन्दविभोर हो जाती हूँ!
पवित्र सरिताओं में स्नान से नहीं,
किन्तु ‘उनका’ नाम गाने से, मैं आनन्दविभोर हो जाती हूँ!
मैं आनन्दविभोर हो जाती हूँ, ‘उनका’ नाम गाने से!

जब ओंकारी गा रही थीं, गगन से वृष्टि पुनः शुरु हो गई। मन्दिर की छत पर एक-दूसरे के साथ जुड़ी ताँबे की चादरों पर वर्षा की बूँदें ज़ोरों से पड़ने लगीं जो उस गोल्डन टेल्स के भजन में अपनी ही ताल व विश्रान्तिदायक लय को मिला रही थीं। ऐसा लगा मानो स्वयं स्वर्गलोक, आशीषों की बौछारों से श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित वैभवशाली मन्दिर का अभिषेक कर रहा हो।

गोल्डन टेल्स क्या थीं, इसकी सुरम्य झलक हमें देने के बाद, ओंकारी बैठ गई। हमने महसूस किया कि उन्होंने हमें एक सिद्धात्मा की उपस्थिति में होने के महत्त्व का स्मरण कराया। यह सत्संग था — सन्तों व सिद्धों की कथाओं में अपने को निमग्न करना। ओंकारी के भजन ने हमारे अन्दर उस बोध को, उस समझ को प्रज्वलित किया कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि श्रीगुरुमाई के साथ सत्संग में उपस्थित हैं।

गुरुमाई जी व बड़े बाबा की उपस्थिति मैं बैठे हुए, हम विस्मयाभिभूत थे कि किस प्रकार यह सम्पूर्ण दिवस उन्मीलित हुआ। हमने उषाकाल से लेकर सन्ध्याकाल तक आराधना की थी, भक्ति का सद्गुण हमारा आधार रहा था। अपनी शुभेच्छा के माध्यम से व अपने सिद्धयोग अभ्यासों के माध्यम से, हम समस्त विश्व के साथ आशीर्वादों को बाँट रहे थे।

हम इस भाव में निमग्न थे, और तभी हमने लाउडस्पीकर में वायु की सरसराहट सुनी; हमने देखा और पाया कि माइक से आ रही ध्वनि गुरुमाई जी के श्वास-प्रश्वास की थी।

२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः

[१] भाषान्तर "सायंप्रातः की आरती" श्लोक ७, स्वाध्याय सुधा, ४था संस्करण, चतुर्थ पुर्नमुद्रण [चितशक्ति पब्लिकेशन्स। साउथ फ़ाल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन, २०१७], पृ. १३१।